दीपावली के अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

संगीत जगत के महान गायक एवं ग़ज़ल सम्राट श्री जगजीत सिंह के देहावसान के पश्चात उनको प.रे. के सांस्कृतिक संगठन के कलाकारों द्वारा संगीतमय श्रद्धांजलि दी गई। दीपावली संगीतोत्सव के अंतर्गत स्व. जगजीत सिंह के गाए हुए मधुर भजनों के साथ-साथ उनकी फिल्मी और गैर फिल्मी रचनाओं को उतनी ही काशिश और शिद्दत के साथ प्रस्तुत किया गया। उनके कशमकश भरे दिनों से लेकर बुलंदी तक के दिनों का ज़िक्र कर, ग़ज़लों में उनके द्वारा दिए गए योगदान को सराहा गया। जगजीत सिंह वह गायक थे, जिन्होंने ग़ज़लों का नया चलन शुरू किया। कठिन और समझ से परे उर्दू शब्दों का सरलीकरण कर उन्होंने ग़ज़ल को ख़ास वर्ग से निकालकर आम जनता तक पहुँचाया। ग़ज़लों को आम आदमी तक पहुँचाने का श्रेय भी जगजीत सिंह को जाता है। ज़िन्दगी के हादसों ने जितना उनको निराश किया, उतना ही दर्द उनकी ग़ज़लों में उतरता चला गया। उनके योगदान को संगीत प्रेमी सदैव याद रखेंगे। सांस्कृतिक संघ के समस्त कलाकारों द्वारा जगजीत सिंह को दी गई श्रद्धांजलि के इस कार्यक्रम को श्रोताओं द्वारा काफी सराहा गया। दीपावली आगमन के पूर्व सप्ताह पर दूसरे दिन अंताक्षरी रखी गई, जिसमें कार्यालय के कर्मचारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। अभिनय द्वारा गीतों को पहचानना, चित्रों के माध्यम से गीतों को पहचानना एवं गीतों की विविध जानकारी अनेक रोचक प्रश्नों सहित, अंतिम अक्षर पर आधारित ऐसे गीतों की लुभावनी और रोचक अंताक्षरी का आयोजन किया गया। हमेशा की तरह फूड फेस्टिवल इस वर्ष भी रखा गया था। अनेक प्रकार के शाकाहारी एवं मांसाहारी व्यंजनों का वाजिब दाम पर कर्मचारियों ने लुत्फ उठाया। मीठे एवं नमकीन व्यंजन, बिरयानी, पाव, चायनीज़, पेटीस इत्यादि लज़ीज़ पकवान मिनटों में साफ हो गए। इस वर्ष दीपावली का आनंद द्विगुणित करने के लिए लॉटरी भी रखी गई, जिसमें टिकटों की बिक्री भी की गई। उल्लेखनीय बात यह रही कि कुछ निर्धारित रकम प.रे. कला एवं सांस्कृतिक संघ की ओर से मिला कर लॉटरी के पुरस्कार खरीदे गये। हर्ष और उल्लास के साथ बड़ी उत्सुकतापूर्वक लॉटरी खोली गई तथा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय विजेताओं के साथ-साथ लगभग सभी टिकट क्रेताओं को कुछ न कुछ पुरस्कार प्रदान किये गये। दीपावली सप्ताह का सबसे आकर्षक एवं सुरीला दिन रहा, जब बडोदरा के श्री राकेश दवे ने प्रसिद्ध गायक श्री मन्नाडे के पुराने गीतों को अत्यंत ही भावपूर्ण तरीके से शास्त्रीय, अर्द्ध शास्त्रीय शैली में प्रस्तुत किया। बडोदरा से विशेष तौर पर बुलवाए गए यह मेहमान कलाकार श्री मन्नाडे जी के गीतों को उतनी ही शिद्दत और मधुरता से गाते हैं। ईश्वर ने उन्हें नेत्रों की दृष्टि तो प्रदान नहीं की परंतु, कंठ में मधुरता और भावस्पर्शी तान ज़रूर प्रदान की है। इस कंठ के माध्यम से वे दूर-दूर तक प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने-आप को पूर्णतया संगीत को समर्पित कर रखा है। संगीत की विधिवत शिक्षा प्राप्त कर आपने सम्पूर्ण समय संगीत और विशेष कर मन्नाडे के गीतों को दे रखा है। श्री मन्नाडे जी ने स्वयं एक बार श्री दवे की काफी तारीफ की थी। यूँ तो उनका गाया हर गीत भाव-विभोर कर देता है, परंतु ऊपर जगत विख्यात, लागा चुनरी में दाग, तेरे नैना तलाश करें, आयो कहाँ से घनश्याम, फूल गेंदवा ना मारो, पूछो न कैसे मैंने रैन बिताई, तुम बिन जीवन कैसा जीवन?, सुर ना सधे, क्या गाऊँ मैं?, इत्यादि गीतों ने गद्‌गद् कर दिया। गीतों ने जितना मंत्रमुग्ध किया, उतना ही सधा हुआ संचालन पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन के सचिव श्री संतोष झा ने किया। सुंदर, सुहाने, लुभावने, पुराने गीतों पर उतना ही मोहक संचालन 'सोने पर सुहागा' का काम कर गया। श्री मन्नाडे के जीवन के साथ-साथ श्री राकेश दवे की भी जानकारी दी गई। कुल मिलाकर यह प्रोग्राम जानकारी से भरा हुआ तथा मनोरंजन के साथ-साथ मन को प्रफुल्लित करने वाला था। हमेशा की तरह ये तीन दिन बड़े उत्साह, आनंद और उल्लास सहित की गई पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन की कलात्मक प्रस्तुति के साथ सभी श्रोताओं के लिए यादगार बन गये।

'मुबारक बेग़म' के बेमिसाल सुरों ने किया गुज़रे ज़माने की यादों को ताज़ा

21 मार्च, 2012 को पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय के गोडबोले हॉल का वातावरण अत्यंत उत्सुकता एवं उत्साह से भरा हुआ था। हॉल का चप्पा-चप्पा श्रोताओं से भरा हुआ था, क्योंकि उस दिन गुज़रे ज़माने की लोकप्रिय गायिका 'मुबारक बेग़म' आई थीं। महाप्रबंधक महोदय के साथ-साथ अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस प्रोग्राम में उपस्थित थे।

पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन के सचिव श्री संतोष झा मशहूर कलाकार सुश्री मुबारक बेग़म का साक्षात्कार लेते हुए।

महाप्रबंधक महोदय द्वारा माननीया मुबारक बेग़म को सम्मानित किया गया। पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन के कलाकारों द्वारा मुबारक बेग़म के गाए हुए चंद मशहूर गीतों को कार्यक्रम में पेश किया गया। सभी कलाकारों ने श्वेत-श्याम कपड़े पहन कर पुरानी श्वेत-श्याम फिल्मों की याद ताज़ा कर दी। पुराने और सदाबहार गीतों पर श्रोताओं की वाह-वाह और तालियों की गूंज पुराने गीतों की लोकप्रियता को दर्शा रही थी। हर गीत को मुबारक बेग़म बड़ी बारीकी से सुन रही थीं और उनके चेहरे से खुशी बखूबी छलक रही थी। पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन के सचिव श्री संतोष झा इस कार्यक्रम का संचालन कर रहे थे। उनके कुशल और प्रभावी संचालन से कार्यक्रम की रौनक में चार-चांद लग गये। मुबारक बेग़म के जीवन से सम्बंधित बातों का ज़िक्र करते हुए उन्होंने मुबारक बेग़म का संक्षिप्त साक्षात्कार भी लिया। श्रोता गण एक-एक किस्से पर गुदगुदा रहे थे। 80 के आस-पास उम्र लेकिन आवाज़ में वही खनक। उम्र के असर से शरीर थक जरूर गया है, लेकिन जब उनका अपना गीत 'कभी तन्हाइयों में यूँ हमारी याद आयेगी' जब उन्होंने गुनगुनाने के नाम पर गाया, तो लगा कि इस आवाज़ पर अब भी उम्र का असर नहीं हुआ है। तालियों के ताल पर उन्होंने बड़ी आत्मीयता से यह गीत गाया तो लगा कि हम गुज़रे ज़माने में पहुँच चुके हैं। साक्षात्कार के दौरान बीच-बीच में जब मुबारक बेग़म अनाउंसर जी-अनाउंसर जी कहती थीं, तो ऐसा लगता था, जैसे रेडियो से साक्षात्कार सुन रहे हैं। साफ दिल, खनकती आवाज़ और बेहतरीन शेरों के ज़रिये उन्होंने दिलों को ही नहीं महफिल को भी लूट लिया।

उम्र के असर से भला कौन छूटा है? लेकिन मुबारक बेग़म ऐसी छवि हैं, जिनकी आवाज़ में आज भी खनक बाकी है। पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन उनकी अच्छी सेहत और लम्बी उम्र की दुआ करता है।

✍श्रीमती पूजा संजय पवार,
कार्यालय अधीक्षक, परिवहन विभाग, चर्चगेट